बलोतरा-राज.। बारमेर और जैसलमेर के सांसद कर्नल सोनाराम को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. उमा।

मोहाली। मदन मोहन मित्तल,इंडस्ट्रीज़,कॉमर्स एंड पार्लियामेंट्री अफेयर्स मिनिस्टर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रमा।

सूरतगढ़-राज.। विधायक राजेन्द्र भादू को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रानी।

मनसा-पंजाब। जेल सुपरीन्टेंडेंट दविन्दर सिंह रंधावा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुदेश।

सिल्चर-असम। कछार जिला के डिप्युटी कमिश्नर एस. स्वामीनाथन को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. ज्योति।

कन्नौज-उ.प्र.। पुलिस कप्तान दिनेश कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीलम। साथ हैं ब्र.कु. पूनम।

फरीदाबाद से.19। ए.वी.एन. स्कूल के डायरेक्टर जे.पी. गुप्ता को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. हरीश तथा ब्र.कु. ज्योति।

नवरात्रि का महत्व

आश्विन शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि जिसे शारदीय नवरात्र के नाम से जाना जाता है का प्रारंभ अंग्रेजी महीने के सितम्बर-अक्टूबर मास में होता है। इस दिन हस्त नक्षत्र प्रतिपदा तिथि के दिन शारदीय नवरात्र का पहला नवरात्रा होता है।

आश्विन मास में शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से प्रारंभ होकर नौ दिन चलने वाला नवरात्र शारदीय नवरात्र है। नव शब्द के दो अर्थ हैं, पहला 'नौ' दूसरा 'नया'। ऐसी मान्यता है कि इस नवरात्र के शुरु होते ही दिन छोटे होने लगते हैं, मौसम में परिवर्तन होना शुरु हो जाता है तथा प्रकृति सर्दी की चपेट में आने लगती है। ऐसी भी मान्यता है कि जन मानस पर ऋतु परिवर्तन का प्रतिकूल प्रभाव न हो, इस लिए नौ दिन के उपवास का भी विधान है। जिसमें साधक संतुलित और सात्विक भोजन कर अपना ध्यान चिंतन और मनन में लगा स्वयं को भीतर से शक्तिशाली बना सकता है। ऐसा करने से भक्ति में मान्यता है कि उसे पुण्यों की प्राप्ति होती है।

नवरात्रि में रात्रि में ही उपासना क्यों?

अगर हम इसके वैज्ञानिक तथ्य को समझें तो कह सकते हैं कि रात्रि में पूर्ण शांति होती है, उस समय का वातावरण उपासना के अनुकूल होता है। मन, ध्यान को एकाग्र करना सरल होता है। अगर इसको ज्ञानयुक्त समझें तो कह सकते हैं कि रात्रि वैसे भी अंधेरे के साथ जुड़ी होती है। जब अंधेरा होता है, उस समय ही हमें प्रकाश की आवश्यकता है, ना कि उजाले में। अत: सोचने का विषय है कि क्या नौ दिन उपासना करने से सारी सिद्धियाँ हमें हमेशा के लिए प्राप्त हो सकती हैं। लेकिन ये प्रतीकात्मक रूप से दर्शाने हेतु किया गया कि आज मनुष्य कलयुग में विकारों के कारण अपनी मनोस्थिति को अंधेरे में ले जा चुका है। उसका मन पूर्णतया असंयमित है। ऐसे में यदि शक्ति की आराधना करनी है तो उसे ज्ञान के प्रकाश की आवश्यकता है। इसके लिए संयम, नियम, उपवास तथा विकारों को पूर्णतया नष्ट करने का व्रत लेने की आवश्यकता है।

नवरात्रि पर्व में नौ दिनों में माता के नौ रूप तथा इनका आध्यात्मिक रहस्य

इन नौ दिनों तक चलने वाले नवरात्र में तीन देवियों, लक्ष्मी और माता के नौ स्वरूपों की पूजा की जाती है। नवरात्रि के पहले तीन दिन पार्वती के तीन स्वरूप, अगले तीन दिन लक्ष्मी माता के स्वरूप और अगले तीन दिन सरस्वती माता के स्वरूप की पूजा की जाती है। नौ रूप निम्नवत है:

शैलपुत्री: शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को प्रथम नवरात्रा होता है। इस दिन पार्वती माता के पहले रूप शैलपुत्री की पूजा होती है। मान्यता है कि शैलपुत्री पर्वतराज हिमालय की पुत्री हैं, इसलिए उनका नाम शैलपुत्री है। शैलपुत्री को लोग खुश करने के लिए गाय का शुद्ध घी अर्पित करते हैं, उनका कहना है कि इससे आरोग्य का आशीर्वाद मिलता है। अर्थात् यदि हम अपने आपको सबसे ऊँची स्थिति में ले जायें, जैसे हिमालय पर्वत सबसे ऊँचा और श्रेष्ठ है, तो परमात्मा द्वारा वैसे ही हमें आरोग्य का आशीर्वाद प्राप्त हो जाएगा, हम इस प्रकृति से ऊपर उठ जायेंगे।

ब्रह्मचारिणी: अश्विन मास के द्वितीया तिथि के दिन माता ब्रह्मचारिणी की पूजा की जाती है। मान्यता है कि माता पार्वती ने शंकर को पति के रूप में पाने के लिए तपस्या की थी, उसी रूप के कारण उनका नाम ब्रह्मचारिणी पड़ा। इसका भाव तो यही है ना कि जब हम तप करते हैं, संयम रखते हैं, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हैं तो हमसे परमात्मा प्रसन्न रहते हैं। उससे पहले उनकी कृपा प्राप्त नहीं हो सकती।

चंद्रघण्टा: शुक्ल पक्ष की तृतीया को माता के तीसरे रूप चन्द्रघण्टा की पूजा की जाती है। इनके माथे पर चन्द्र अर्ध रूप में

विराजमान है। इसका अर्थ ये है कि जब हम अपनी ऊँची स्थिति में होते हैं, परमात्मा के नज़दीक होते हैं तो चन्द्रमा जो शीतलता का प्रतीक है, वो स्वत: हमारे मस्तक पर विराजमान होता है। हम हमेशा शांत और सहज होते हैं। इसलिए उनके मस्तिष्क पर अर्धचन्द्र दिखाया गया।

कुष्माण्डा: नवरात्र का चौथा दिन माता कुष्माण्डा का होता है। मान्यता है कि ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति कुष्माण्डा के उदर से हुई। अर्थात् जब हम तप के बल से परमात्मा को प्राप्त कर लेते हैं, संयम-नियम का पालन करते हैं, शांति की अति सहज स्थिति होती है, उस समय हमारे संकल्प से ब्रह्माण्ड चलना शुरु हो जाता है। उदर का अर्थ विचारों की उत्पत्ति से है और विचार संकल्पों को ही कहते हैं। आप वैसे भी सोच सकते हैं कि माता के उदर से ब्रह्माण्ड कैसे निकलेगा! लेकिन आपके संकल्पों से ब्रह्माण्ड या सृष्टि का निर्माण होता है। वो तभी हो सकता है जब उपरोक्त बातें आपके अंदर होंगी।

स्कंदमाता: नवरात्र के पाँचवे दिन स्कंद माता की पूजा की जाती है। स्कंद माता को कुमार कार्तिकेय की माता भी कहा जाता है। स्कंद कार्तिकेय का एक नाम है, और इनकी माता होने के कारण उनका नाम स्कंद माता है। मान्यता है कि इनकी उपासता से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

कात्यायनी: षष्टी तिथि को माता के इस रूप की पूजा होती है। माता कात्यायनी ऋषि कात्यायन की पुत्री हैं। मान्यता है कि अपनी तपस्या से माता को प्रसन्न करने के बाद उनके यहाँ माता ने पुत्री रूप में जन्म लिया, इसलिए उन्हें कात्यायिनी नाम दिया गया।

कालरात्रि: अश्विन मास की नवरात्रि के सप्तम तिथि में माता कालरात्रि की पूजा की जाती है। जैसे कि नाम से भी स्पष्ट है कि यह काल अर्थात् बुरी शक्तियों का नाश करने वाली हैं इसलिए इन्हें कालरात्रि कहा गया।

महागौरी : अष्टमी के दिन माता के आठवें रूप महागौरी की उपासना होती है। अपने गौर वर्ण के कारण इनका नाम महागौरी पड़ा। जब हम सम्पूर्ण रूप से पवित्र हो जाते हैं तो पवित्रता के कारण हमारी रुहानियत में वृद्धि होती है, जिसके कारण ही हम सबसे साफ-सुथरे और आध्यात्मिक रूप से आकर्षक दिखते हैं। इसीलिए साधक ज़्यादातर हर असंभव कार्य को संभव करने का आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु महागौरी की उपासना करते हैं।

सिद्धिदात्री: नवरात्र का नौवाँ दिन सिद्धिदात्री माता की पूजा-आराधना का होता है। माता सिद्धिदात्री सभी प्रकार की सिद्धियाँ देने वाली कही जाती हैं। इन्हें सिद्धियों की स्वामिनी भी कहते हैं। इसमें उपासक को सर्व सिद्धियाँ प्राप्त हो सकती हैं, यदि वो विश्व कल्याणार्थ कार्य करना प्रारंभ करे। सिद्धिदात्री दरअसल हमारे संकल्पों की सिद्धि के साथ जुड़ा हुआ है। आज व्यक्ति को सबसे ज़्यादा भय मृत्यु का है। इस मृत्यु के भय से निकलने हेतु हमें सबसे पहले अपने आपको समझकर यह जानना होगा कि हम सभी अजर हैं, अमर हैं, अविनाशी हैं। हम यदि नियम प्रमाण, मर्यादाओं के आधार से जीवन जियें तो हम अमरत्व को प्राप्त हो सकते हैं।

अत: हम भी नवरात्रि के उत्सव के अंतर्गत अपने जीवन में नवीनता लाने हेतु उपरोक्त नौ दिन तक जो भी बातों का उल्लेख किया गया है उसे उसी रूप से जीवन में अपनाकर मनोस्थिति को श्रेष्ठ और परिपक्व बनायें और नवरात्रि त्योहार मनायें। ●